आपके पत्र

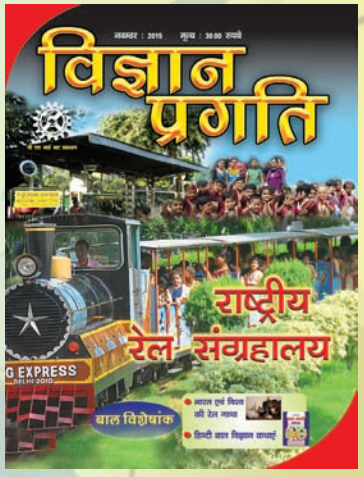

आकर्षक पत्रिका

विज्ञान प्रगति के नवम्बर 2015 के अंक की आमुख कथा 'राष्ट्रीय रेल संग्रहालय' ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। रेल परिवहन संग्रहालय (RTM) की नींव का पत्थर 7 अक्तूबर 1971 को नई दिल्ली के चाणक्यपुरी क्षेत्र में रखा गया। राष्ट्रीय रेल संग्रहालय देश में अपनी तरह का पहला संग्रहालय है जो दिल्ली के हृदय में स्थित 11 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। 100 वर्ष से भी अधिक पुराने रेल इंजन को यहां सुरक्षित रखा गया है। यह इंजन भारत में बनने वाला पहला रेल इंजन है। इसे अजमेर वर्कशॉप ने सन् 1895 में बनाया गया था। इन सभी महत्वपूर्ण जानकारियों से युक्त यह अंक बहुत आकर्षक लगा।

श्री अशोक कुमार ठाकुर
ग्राम-मालीटोल, पोस्ट-अदलपुर, जिला-दरभंगा (बिहार)
[मो. : 08298407429;
ई-मेल : ashokkumarthakur9@gmail.com]

ज्ञान का भंडार

मैं विज्ञान प्रगति की विगत 26 वर्षों से पाठक हूँ। इस पत्रिका से ही मुझे बच्चों के लिए विज्ञान कथाएं लिखने की प्रेरणा मिली और विभिन्न पत्रिकाओं में मेरी रचनाएं भी छपी हैं। विज्ञान प्रगति पत्रिका में रचना छपना अपने आप में बहुत बड़ी बात होती है। विज्ञान प्रगति की प्रिंटिंग व मुखपृष्ठ बहुत आकर्षक होता है। इसमें उपयोग में लाया गया कागज उत्कृष्ट कोटि का है। पत्रिका पढ़ने व पलटने में भी आनंद का अनुभव होता है। इसके चित्र बहुत सुन्दर होते हैं। इसके हर पृष्ठ पर जानकारियों का भंडार होता है। महीनों बाद भी पत्रिका पढ़ने में कुछ नई बात समझ में आती है। मेरे ससुर रसायन विज्ञान के अध्यापक थे। वे विज्ञान प्रगति पढ़ते थे व अपने विद्यार्थियों को इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे।

डा. अर्पिता अग्रवाल
काकली मेंशन, 120-बी/2, साकेत, सिविल लाइन्स, मेरठ 250003 (उ.प्र.)
[ई-मेल : dr.arpita_saket@yahoo.com]

ज्ञानवर्द्धक पत्रिका

वह वर्ष 2001 का जून माह था जब मैं पहली बार विज्ञान प्रगति पत्रिका से रू-ब-रू हुआ। हमारे मित्र सुधीर ओझा जी ने 'विज्ञान प्रगति' का एक अंक मुझे सौंपते हुए कहा-'यदि विज्ञान का ज्ञान रोचक तरीके से प्राप्त करना है तो इससे बेहतर विकल्प नहीं हो सकता। सच में यह पत्रिका तुलनात्मक रूप से अन्य पत्रिकाओं से कहीं अधिक रोचक व ज्ञानवर्धक है। आज भी 'विज्ञान प्रगति' के प्रति लालसा व उत्कण्ठा वही है.... कि आगामी अंक में नया क्या?

'विज्ञान प्रगति' पत्रिका हिन्दी भाषी नौनिहालों के विज्ञान विषयक ज्ञान का एक उत्कृष्ट सोपान है जिसका उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है। यह पत्रिका अपने विषय क्षेत्र की अनन्तता में सूर्य की प्रखर रश्मि की भांति सदैव प्रकाशित होती रहे व ज्ञान प्रकाश का प्रसार करती रहे यही मेरी कामना है।

श्री दिनेश मिश्र (एडवोकेट)
चैम्बर संख्या-01, श्री बाबू राम तिवारी स्मृति भवन, कचहरी कैम्पस, गोण्डा 271001 (उ.प्र.)
[मो. : 09839837400;
ई-मेल : mishra.dk301@gmail.com]

अद्वितीय पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ और मुझे इसका प्रत्येक अंक रोचक, अद्वितीय एवं ज्ञानवर्द्धक लगता है। मैं विज्ञान प्रगति को दिव्य ज्ञान की ज्योति मानता हूँ क्योंकि इस पत्रिका के माध्यम से प्राप्त होने वाली नवीन जानकारियाँ विद्यार्थियों के साथ-साथ प्रत्येक वर्ग एवं विषय के व्यक्तियों के लिए बहुत उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक होती हैं।

श्री विमल वर्मा
मोहल्ला दुर्गा प्रसाद, निकट कोल्ड स्टोर बीसलपुर, जिला-पीलीभीत 262201 (उ.प्र.)

शिक्षाप्रद पत्रिका

विज्ञान प्रगति का अक्तूबर 2015 का अंक बहुत अच्छा लगा। इस अंक में प्रकाशित प्लूटो के बारे में अनेक जानकारियां पढ़कर बहुत आनन्द आया। यह पत्रिका सचमुच एक शिक्षक की तरह है जो बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी का मार्गदर्शन करती है। मैं वर्ष 2013 से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ तथा विज्ञान प्रगति ने मेरी विज्ञान में गहरी रुचि पैदा की है। इसी के साथ मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल को विज्ञान प्रगति के अच्छे प्रकाशन के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।

श्री राजा कुमार, सुपुत्र श्री राधापति यादव, ग्राम-रामफल के टोला, पो. - खवासपुर, जिला-भोजपुर 841312 (बिहार)
[मो. : 07237089821;
ई-मेल : rajakumar18696@gmail.com]

कलाम को सलाम

'विज्ञान प्रगति' पत्रिका का अक्तूबर 2015 का अंक पढ़ने को मिला। इस अंक में भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की कुछ झलक व मुद्रित की हुई जानकारी मिली। इस अंक को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इसके द्वारा महामहिम डा. कलाम साहब को पाठकों की ओर से सच्ची श्रद्धान्जलि अर्पित की गयी है। इसके लिए सम्पादक मंडल को बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित कर रहे हैं। कलाम साहब ने जो भारत के लिए मिशन दिया उसको हमें पूरा करना चाहिए तभी पूरे राष्ट्र की तरफ से उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकेगी। इसके साथ ही कलाम साहब ने यह साबित कर दिया कि भारत किसी भी मामले में पीछे नहीं है और न ही रहेगा। इसके अतिरिक्त 'न्यू होराइजंस अभियान', सौरमंडल का बौना ग्रह-प्लूटो, खाद्य एवं पौष्टिक सुरक्षा के सतत् प्रयास प्रकाशित करके पाठकों को अद्भुत जानकारी दी है। मैं सम्पादक मंडल व पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

डा. सत्य प्रकाश
सुपुत्र डॉ. राम विष्णु प्रसाद, ग्राम-बरवाँ, पो.-मीरगंज, जिला-गोपालगंज 841428 (बिहार)
[मो. : 09471040259, 09661609850;
ई-मेल : satyaprakashsahara@gmail.com]